

पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

"यशपाल" का जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान

जीवन परिचय

यशपाल (3 दिसंबर 1903 – 26 दिसंबर 1976) हिंदी साहित्य के प्रमुख क्रांतिकारी लेखक, पत्रकार और विचारक थे। उनका जन्म फिरोजपुर छावनी, पंजाब (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उनके पिता स्वर्गीय श्री हीरालाल एक सरकारी कर्मचारी थे। यशपाल ने अपनी शिक्षा लाहौर में पूरी की और क्रांतिकारी आंदोलनों से जुड़ गए।

वे भगत सिंह के सहयोगी रहे और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) से जुड़े। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए गिरफ्तार कर 14 साल की सजा सुनाई, जिसके बाद वे साहित्य की ओर मुड़े।

साहित्यिक योगदान

यशपाल ने यथार्थवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से साहित्य रचा। उनकी रचनाओं में सामाजिक अन्याय, शोषण, नारी विमर्श और क्रांति के विषय प्रमुख हैं।

प्रमुख रचनाएँ:

- उपन्यास:
 - दिव्या (1945)
 - झूठा सच (दो भाग – 1958, 1960)
 - मेरी तेरी उसकी बात (1975)
- कहानी संग्रह:
 - पिंजरे की उड़ान
 - भस्मावृत चिंगारी
 - तर्क का तूफान
- आत्मकथा:
 - सिंहावलोकन (1951)

साहित्यिक विशेषताएँ:

1. यथार्थवादी शैली: उनकी रचनाएँ समाज के कड़वे सच को बेबाकी से दिखाती हैं।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

2. क्रांतिकारी विचारधारा: वे मजदूरों, किसानों और नारी शोषण के विरुद्ध लिखते थे।
3. भाषा शैली: सरल, प्रभावी और तर्कपूर्ण भाषा का प्रयोग।

निधन

26 दिसंबर 1976 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया, लेकिन उनका साहित्य आज भी पाठकों को प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

यशपाल ने हिंदी साहित्य को जनवादी और प्रगतिशील विचारधारा से समृद्ध किया। उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक बदलाव की प्रेरणा देती हैं।

प्रश्न – अभ्यास:

प्रश्न 1. लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं ?

उत्तर 1

- जब लेखक ट्रेन के सेकंड क्लास डिब्बे में प्रवेश करता है, तो वह देखता है कि एक व्यक्ति, जिन्हें नवाब साहब कहा जा सकता है, एक बर्थ पर पालथी मारकर बैठे हुए हैं।
- लेखक के डिब्बे में आने पर, नवाब साहब के चेहरे पर असंतोष का भाव झलकता है।
- थोड़ी देर तक, नवाब साहब लेखक से बात किए बिना खिड़की के बाहर देखते रहते हैं।
- उनके इन हाव-भावों से लेखक को यह आभास होता है कि नवाब साहब उससे बातचीत करने में कोई रुचि नहीं रखते।

प्रश्न 2. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर: 2

- नवाब साहब ने खीरा काटने और उसमें नमक-मिर्च डालने जैसी पूरी प्रक्रिया सिर्फ इसलिए की होगी ताकि वे अपनी खानदानी तहजीब, नफासत और रईसी का प्रदर्शन कर सकें।
- उनका यह व्यवहार उनके दिखावे और बनावटी जीवनशैली की ओर संकेत करता है। इससे यह प्रतीत होता है कि वे अपनी छवि को लेकर अत्यधिक सजग और दिखावे में रुचि रखते थे।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

प्रश्न 3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: 3

- बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी लिखना संभव है, लेकिन ऐसी कहानी में वह गहराई और प्रभाव नहीं होगा, जो विचारशील कथानक और पात्रों से भरी कहानियों में होता है।
- ऐसी कहानी पाठक को वैसा अनुभव देगी, जैसे किसी फल को खाए बिना उसकी खुशबू से ही संतोष कर लिया जाए।
- इस प्रकार की कहानियों में कल्पना का अधिक महत्व होगा, लेकिन उनमें वास्तविकता और जीवन के सार का अभाव रहेगा।

यह विचार इस बात पर जोर देता है कि प्रभावी कहानी के लिए विचार, पात्र, और घटनाओं का होना जरूरी है, क्योंकि ये तत्व कहानी को पाठकों से जोड़ने और उन्हें प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 4. आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?

उत्तर- 4: इस निबंध को निम्नलिखित नाम दिए जा सकते हैं:

1. "कहानी के तत्वों का महत्व"
2. "विचार, पात्र और घटना: कहानी की आत्मा"
3. "कल्पना और यथार्थ के बीच कहानी"
4. "प्रभावशाली कहानी की कला"
5. "क्या बिना तत्वों के कहानी संभव है?"

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5. (क) नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर 5-(क): नवाब साहब ने खीरा खाने की तैयारी शुरू की। सबसे पहले, उन्होंने अपना तौलिया बिछाया और दोनों खीरे धोकर उन्हें अच्छे से पोंछ लिया। फिर उन्होंने अपनी जेब से चाकू निकाला और खीरे के सिर को काटकर अंदर का झाग निकाल दिया। इसके बाद, उन्होंने खीरे को सावधानी से छोलते हुए, उन्हें फाँक में काट लिया और तौलिये पर सजा दिया। इस दौरान, नवाब साहब ने खीरे की फाँकों पर जीरे के साथ नमक और लाल मिर्च का चूर्ण बड़े ध्यान से छिड़का। पूरे समय वे खीरे के स्वाद का आनंद लेते हुए प्रसन्नचित रहे।

(ख) किन-किन चीजों का रसास्वादन करने के लिए आप किस प्रकार की तैयारी करते हैं?

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

उत्तर 5-(ख): हर व्यक्ति अपनी पसंदीदा चीजों का आनंद लेने के लिए अलग-अलग प्रकार की तैयारी करता है। मेरी पसंद के अनुसार, मैं निम्नलिखित चीजों का रसास्वादन करने के लिए इस प्रकार की तैयारी करता हूँ:

1. फल खाने के लिए:

- फलों को अच्छी तरह धोकर साफ करता हूँ।
- यदि आवश्यक हो तो उन्हें छीलता हूँ और छोटे-छोटे टुकड़ों में काटता हूँ।
- स्वाद बढ़ाने के लिए हल्का सा चाट मसाला या नींबू का रस डालता हूँ।

2. चाय या कॉफी का आनंद लेने के लिए:

- पानी या दूध को उबालता हूँ।
- स्वादानुसार चायपत्ती, चीनी या कॉफी पाउडर डालता हूँ।
- मनपसंद मसाले जैसे अदरक या इलायची मिलाकर गर्म-गर्म परोसता हूँ।

3. पकौड़े या चाट का स्वाद लेने के लिए:

- ताजी सामग्री जैसे आलू, पनीर या सब्जियां तैयार करता हूँ।
- बेसन का घोल बनाकर पकौड़े तलता हूँ।
- चाट के लिए सामग्री जैसे दही, इमली की चटनी और मसाले तैयार रखता हूँ।

4. शीतल पेय या शर्बत के लिए:

- ताजे फल का रस निकालता हूँ।
- उसमें चीनी, नींबू का रस या पुदीने की पत्तियां मिलाकर ठंडा-ठंडा परोसता हूँ।

इन सभी तैयारियों में सफाई और सलीके का ध्यान रखना मुझे बेहद पसंद है, ताकि हर चीज का स्वाद संपूर्ण और आनंददायक हो।

प्रश्न 6. खीरे के संबंध में नवाब साहब के व्यवहार को उनकी सनक कहा जा सकता है। आपने नवाबों को और भी सनकों और शौक के बारे में पढ़ा-सुना होगा। किसी एक के बारे में लिखिए।

उत्तर 6.

नवाबों की जीवनशैली अपने अनोखे शौक और सनकों के लिए प्रसिद्ध रही है। उनके शौक अक्सर अद्वितीय और विलासितापूर्ण होते थे। इनमें से एक प्रसिद्ध किस्सा अवध के नवाब वाजिद अली शाह से जुड़ा है।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

वाजिद अली शाह और कबूतरबाजी का शौक: वाजिद अली शाह को कबूतरबाजी का अत्यधिक शौक था। उनके पास अनगिनत प्रकार के कबूतर थे, जिन्हें वह बड़े ही प्रेम और ध्यान से पालते थे। उन्होंने अपने कबूतरों के लिए विशेष ट्रेनिंग की व्यवस्था की थी ताकि वे उनकी आजाओं का पालन करें। उनके पास कबूतरों की देखभाल के लिए सेवक भी थे, जो उनके भोजन, स्वास्थ्य और सफाई का ध्यान रखते थे।

यह भी कहा जाता है कि वाजिद अली शाह अपने पसंदीदा कबूतरों के प्रदर्शन का आयोजन करते थे, जिसमें उन्हें उनके करतब दिखाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। उनके इस शौक में इतना समय और धन लग जाता था कि इसे उनकी सनक कहा जाने लगा।

नवाबों की ऐसी विलासितापूर्ण जीवनशैली और अनोखी रुचियां उनकी संस्कृति का हिस्सा थीं, जो आज भी इतिहास में एक रोचक पहलू के रूप में दर्ज हैं।

प्रश्न 7. क्या सनक का कोई सकारात्मक रूप हो सकता है? यदि हाँ तो ऐसी सनकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर 7.

सनक को सामान्यतः नकारात्मक रूप में देखा जाता है, लेकिन यदि यह किसी रचनात्मक या समाजोपयोगी कार्य की ओर प्रेरित करे, तो इसका सकारात्मक रूप भी हो सकता है। ऐसी सनकें व्यक्ति को कुछ अलग और अद्भुत करने के लिए प्रेरित करती हैं।

सकारात्मक सनकों के उदाहरण:

1. पर्यावरण संरक्षण का जुनून:

- कुछ लोग पर्यावरण बचाने के प्रति इतने समर्पित होते हैं कि इसे उनकी "सनक" कहा जा सकता है। जैसे, *जाधव "मोलाई" पायेंग*, जिन्होंने अपनी सनक के कारण एक पूरे जंगल को अकेले अपने प्रयासों से उगा दिया।

2. साहित्य और कला के प्रति समर्पण:

- प्रसिद्ध लेखक और कवि अक्सर अपनी लेखन शैली और विषयों के प्रति अत्यधिक जुनून रखते हैं। यह सनक न केवल उन्हें विशेष बनाती है, बल्कि समाज को प्रेरित भी करती है।

3. खेलों के प्रति समर्पण:

- खिलाड़ियों की खेल के प्रति दीवानगी को भी एक सकारात्मक सनक कहा जा सकता है। जैसे, सचिन तेंदुलकर का क्रिकेट के प्रति जुनून, जिसने उन्हें "क्रिकेट का भगवान" बना दिया।

4. वैज्ञानिक अनुसंधान का जुनून:

- महान वैज्ञानिक, जैसे थॉमस एडिसन या निकोला टेस्ला, अपनी "सनक" की वजह से ही दुनिया को नई खोजें दे पाए।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

5. सामाजिक सेवा का जुनून:

- मदर टेरेसा का समाज की सेवा के प्रति समर्पण उनकी सकारात्मक सनक का उदाहरण है। उनका जीवन दूसरों की भलाई के लिए समर्पित रहा।

निष्कर्ष:

यदि किसी व्यक्ति की सनक समाज, पर्यावरण, या संस्कृति को बेहतर बनाने में योगदान देती है, तो इसे सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए। ऐसी सनकें न केवल व्यक्ति के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा बन सकती हैं।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 8. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियापद छाँटकर क्रिया-भेद भी लिखिए-

- (क) एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे।
 (ख) नवा साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया।
 (ग) ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है।
 (घ) अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे।
 (ङ) दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला।
 (च) नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा।
 (छ) नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए।
 (ज) जेब से चाकू निकाला।

उत्तर 8-

क्रियापद	क्रिया-भेद
(क) बैठे थे	अकर्मक
(ख) दिखाया	सकर्मक
(ग) है	अकर्मक
(घ) खरीदे होंगे	सकर्मक
(ङ) निकाला	सकर्मक
(च) देखा	सकर्मक
(छ) लेट गए	अकर्मक
(ज) निकाला	सकर्मक

पाठेतर सक्रियता

- 'किबला शौक फरमाएँ', 'आदाब- अर्ज..... शौक फरमाएँगे' जैसे कथन शिष्टाचार से जुड़े हैं। अपनी मातृभाषा के शिष्टाचार सूचक कथनों की एक सूची तैयार कीजिए।

उत्तर: शिष्टाचार से जुड़े कथन किसी भी भाषा और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा होते हैं। ये व्यक्तियों के बीच सम्मान और विनम्रता का संचार करते हैं। नीचे हिंदी भाषा में शिष्टाचार सूचक कुछ प्रमुख कथनों की सूची प्रस्तुत है:

1. नमस्ते/प्रणाम - अभिवादन के लिए।
2. क्षमा कीजिएगा - माफी मांगने के लिए।
3. कृपया/मेहरबानी करके - विनम्रता से अनुरोध करने के लिए।
4. धन्यवाद/शुक्रिया - आभार व्यक्त करने के लिए।
5. आपका दिन शुभ हो - शुभकामनाएं देने के लिए।
6. क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ? - मदद की पेशकश के लिए।
7. आप कैसे हैं? - हालचाल पूछने के लिए।
8. मुझे क्षमा करें, मैंने ध्यान नहीं दिया। - गलती स्वीकार करने के लिए।
9. आइए, बैठिए। - आतिथ्य दिखाने के लिए।
10. आपसे मिलकर खुशी हुई। - मुलाकात पर प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए।
11. यह आप ही की कृपा है। - विनम्रता दिखाने के लिए।
12. आपका स्वागत है। - किसी का स्वागत करने के लिए।
13. कष्ट के लिए खेद है। - असुविधा के लिए खेद जताने के लिए।
14. बड़े कृपालु हैं आप। - प्रशंसा व्यक्त करने के लिए।
15. पुनः मिलने की आशा है। - विदाई के समय।

इन कथनों का उपयोग रोजमर्रा के जीवन में विनम्रता और शिष्टाचार बनाए रखने के लिए किया जाता है।

- 'खीरा.... मेदे पर बोझ डाल देता है' क्या वास्तव में खीरा अपच करता है? किसी भी खाद्य पदार्थ का पच-अपच होना कई कारणों पर निर्भर करता है। बड़ों से बातचीत कर कारणों का पता लगाइए।

उत्तर:

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

"खीरा मेदे पर बोझ डाल देता है" जैसे कथन अक्सर अनुभवजन्य होते हैं और किसी विशेष परिस्थिति या व्यक्ति के शारीरिक अनुभवों पर आधारित होते हैं। खीरा आमतौर पर हल्का और पाचन में सहायक माना जाता है, लेकिन कुछ मामलों में यह अपच का कारण बन सकता है। इसे बेहतर समझने के लिए बड़ों से बातचीत और जानकारी के अनुसार निम्नलिखित कारण सामने आते हैं:

खीरा अपच क्यों कर सकता है?

1. खाली पेट खीरा खाना:

- कुछ लोग सुबह खाली पेट खीरा खाते हैं, जो गैस या अम्लता (एसिडिटी) का कारण बन सकता है।

2. अधिक मात्रा में खाना:

- खीरा में पानी की मात्रा अधिक होती है। इसे अत्यधिक मात्रा में खाने से पेट में भारीपन महसूस हो सकता है।

3. पाचन क्षमता का फर्क:

- जिन लोगों की पाचन शक्ति कमजोर होती है, वे खीरा खाने पर अपच का अनुभव कर सकते हैं।

4. फाइबर की अधिकता:

- खीरे में फाइबर अधिक होता है, जो अधिक मात्रा में लेने पर कुछ लोगों के लिए भारी हो सकता है।

5. शरीर की प्रकृति:

- आयुर्वेद के अनुसार, खीरा ठंडी तासीर वाला होता है। कुछ लोगों के शरीर में यदि "कफ दोष" अधिक हो, तो खीरा उनके पाचन में बाधा डाल सकता है।

6. मसालों या ड्रेसिंग का प्रभाव:

- खीरा पर छिड़के गए मसाले, नमक, या मिर्च भी अपच का कारण बन सकते हैं।

खीरा खाने के फायदे और सही तरीका:

- खीरा विटामिन सी और एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर होता है।
- इसे भोजन के साथ संतुलित मात्रा में खाएं।
- छिलका सहित खीरा खाने से फाइबर की मात्रा बढ़ती है, लेकिन जिन लोगों को छिलका भारी लगता है, वे इसे छीलकर खा सकते हैं।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

- भोजन के तुरंत बाद खीरा खाने से बचें।
- खीरे को दही या पुदीने के साथ मिलाकर खाने से पाचन बेहतर होता है।

निष्कर्ष:

खीरा सामान्यतः पाचन के लिए लाभकारी होता है, लेकिन इसका प्रभाव व्यक्ति की पाचन क्षमता और खाने के तरीके पर निर्भर करता है। बड़ों के अनुभव से समझ आता है कि संयमित मात्रा और सही समय पर खाया गया खीरा लाभकारी होता है।

- खाद्य पदार्थों के संबंध में बहुत सी मान्यताएँ हैं जो आपके क्षेत्र में प्रचलित होंगी, उनके बारे में चर्चा कीजिए।

उत्तर: खाद्य पदार्थों के संबंध में कई मान्यताएँ और परंपराएँ विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित होती हैं। कुछ सामान्य मान्यताएँ इस प्रकार हैं:

1. दूध और फल न मिलाना:

- कई लोग मानते हैं कि दूध और फल एक साथ नहीं खाने चाहिए, क्योंकि इससे पाचन में समस्या हो सकती है।

2. चाय के बाद पानी न पीना:

- यह मान्यता है कि चाय के बाद पानी पीने से पाचन क्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

3. रात को खीरा या तरबूज नहीं खाना:

- कुछ लोग मानते हैं कि रात में खीरा या तरबूज खाने से पाचन में असुविधा होती है और यह गला या पेट खराब कर सकता है।

4. तला हुआ खाना हानिकारक:

- यह मान्यता है कि तला हुआ खाना अधिक खालने से शरीर में गर्मी और तंतू की कमी हो सकती है।

5. अदरक और शहद का सेवन:

- यह माना जाता है कि अदरक और शहद का सेवन सर्दियों में करना स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है, खासकर सर्दी-जुकाम में।

ये मान्यताएँ सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा होती हैं, लेकिन इनका वैज्ञानिक समर्थन हमेशा नहीं होता।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

- पतनशील सामंती वर्ग का चित्रण प्रेमचंद ने अपनी एक प्रसिद्ध कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' में किया था और फिर बाद में सत्यजीत राय ने इस पर इसी नाम से एक फिल्म भी बनाई थी। यह कहानी ढूँढकर पढ़िए और संभव हो तो फिल्म भी देखें।

उत्तर:

प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी "शतरंज के खिलाड़ी" 1916 में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी में प्रेमचंद ने सामंती वर्ग के पतन को बखूबी चित्रित किया है। कहानी दो प्रमुख पात्रों, मीरसा और सुलतान खान के इर्द-गिर्द घूमती है, जो शतरंज के शौकीन होते हैं और बृजभूमि के एक छोटे से शहर में रहते हैं। दोनों के बीच एक गहरी दोस्ती है, लेकिन उनकी जिंदगी की असल घटनाएं राजनीतिक और सामाजिक संकटों से जुड़ी होती हैं।

कहानी में शतरंज का खेल सामंती मानसिकता का प्रतीक है—जहां ये पात्र अपने राजसी जीवन के बारे में सोचते हैं, जबकि उनके देश में राजनीतिक संकट बढ़ रहे होते हैं। यह कहानी दिखाती है कि कैसे ये पात्र अपने आत्मकेन्द्रित और विलासपूर्ण जीवन में ही खोए रहते हैं, जबकि उनके आस-पास देश का समाज और शासन टूटते जा रहे होते हैं। प्रेमचंद ने इन पात्रों के माध्यम से सामंती व्यवस्था के अंत और उसके बर्बादी को उजागर किया है।

सत्यजीत राय ने इसी कहानी पर आधारित फिल्म "शतरंज के खिलाड़ी" बनाई थी, जो 1977 में रिलीज हुई थी। फिल्म में सत्यजीत राय ने प्रेमचंद की कहानी को समर्पित रूप से चित्रित किया और सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ को सटीकता से दर्शाया। इस फिल्म में संजीव कुमार, अमरीश पुरी, और शबाना आजमी जैसे प्रमुख कलाकारों ने अभिनय किया था। फिल्म को भी व्यापक रूप से सराहा गया, खासकर इसके गहरे समाजिक संदेश और कलाकारों की प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए।

आप कहानी पढ़ने के लिए इसे ऑनलाइन या लाइब्रेरी से आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, और फिल्म देखने के लिए विभिन्न वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म पर उपलब्ध है।

पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1: यशपाल की कहानी "लखनवी अंदाज" में लेखक ने स्लीपर क्लास का टिकट क्यों लिया?

उत्तर: यशपाल द्वारा लिखित "लखनवी अंदाज" में लेखक ने स्लीपर क्लास का टिकट इसलिए लिया क्योंकि यात्रा दूर की नहीं थी। वह भीड़ से बचकर एकांत में खिड़की के पास बैठकर नई कहानी के संबंध में सोचने और प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेने का इच्छुक था। साथ ही, कम दाम में शांति की तलाश ही इस निर्णय का प्रमुख कारण थी।



Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

प्रश्न 2: लेखक के डिब्बे में चढ़ने पर नवाब साहब की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर: जब लेखक डिब्बे में चढ़ा, तो यशपाल ने नवाब साहब की आँखों में असंतोष और असहजता का स्पष्ट वर्णन किया। ऐसा लगा कि उनकी एकांतता में विघ्न पड़ा हो। लेखक को संदेह हुआ कि नवाब साहब सस्ते दर्जे में देखे जाने को लेकर संकोच में हैं या खीरे-जैसी साधारण वस्तु खाते हुए पकड़े जाने में शर्मिंदा हैं।

प्रश्न 3: नवाब साहब ने खीरा कैसे तैयार किया और उसका क्या महत्व था?

उत्तर: यशपाल की इस कहानी में नवाब साहब ने खीरे को बहुत नफासत और तहज़ीब के साथ तैयार किया। उन्होंने खीरे को धोकर, छीलकर, करीने से तौलिये पर सजाया और उस पर नमक- मिर्च बुरक दी। यह तैयारी उनकी नवाबी संस्कृति और खानदानी अंदाज़ को दर्शाती है। यह प्रक्रिया उनकी कल्पनाशक्ति और रसास्वादन की मानसिक तृप्ति को दर्शाती है।

प्रश्न 4: लेखक ने नवाब साहब के खीरा खाने के तरीके को कैसे देखा?

उत्तर: यशपाल ने नवाब साहब के खीरे खाने की प्रक्रिया को एक 'नफीस कल्पना' के रूप में दर्शाया। नवाब साहब ने खीरे की पफाँकों को केवल सूँघा और स्वाद की कल्पना से तृप्त होकर खिड़की के बाहर फेंक दिया। लेखक ने इसे एक प्रकार की 'एब्स्ट्रैक्ट तृप्ति' माना, लेकिन प्रश्न भी उठाया कि क्या इससे पेट की भूख मिट सकती है।

प्रश्न 5: अंत में लेखक ने नवाब साहब की किस पहचान को उजागर किया?

उत्तर: कहानी के अंत में यशपाल ने नवाब साहब की असली पहचान उजागर की। खीरे की कल्पना मात्र से डकार लेने और 'खीरा सकील होता है' कहने वाले नवाब दरअसल एक 'नई कहानी' के लेखक निकले। इससे लेखक को यह बोध हुआ कि जैसे कल्पना से पेट भर सकता है, वैसे ही लेखक की कल्पना से नई कहानी भी बन सकती है।

प्रश्न 6: "लखनवी अंदाज़" शीर्षक कहानी में यशपाल ने नवाबी संस्कृति का चित्रण किस रूप में किया है?

उत्तर: यशपाल ने "लखनवी अंदाज़" में नवाबी तहज़ीब और नफासत को व्यंग्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। नवाब साहब का खीरे की तैयारी और उपयोग का ढंग खानदानी नज़ाकत और दिखावे को उजागर करता है। यह कहानी नवाबी शैली की सतही भव्यता और भीतर के विरोधाभास को व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 7: यशपाल की कहानी में खीरे को लेकर नवाब साहब की मानसिकता क्या दर्शाती है?

उत्तर: यशपाल ने इस कहानी में नवाब साहब के खीरे को देखने, सजाने और सूँघकर बाहर फेंकने की प्रक्रिया के माध्यम से उनकी मानसिकता को दर्शाया है। नवाब साहब दिखावे और खानदानी शान के प्रति इतने सजग हैं कि वे खीरा खाकर तृप्त नहीं होते, बल्कि उसकी सुगंध और कल्पना से ही रसास्वादन करते हैं। यह मानसिकता दिखावे पर आधारित रईसी को उजागर करती है।

प्रश्न 8: यशपाल ने नवाब साहब के व्यवहार में किस विरोधाभास को उजागर किया है?

उत्तर: यशपाल ने नवाब साहब के व्यवहार में गहरे विरोधाभास को उजागर किया है। एक ओर वे स्वयं को खानदानी और रईस दिखाना चाहते हैं, वहीं दूसरी ओर सस्ते दर्जे में यात्रा करते हैं। वे खीरे को बड़े सलीके से सजाते हैं, लेकिन खाते नहीं। यह उनके दिखावटीपन और अंदरूनी संकोच का प्रतीक है।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

प्रश्न 9: लेखक के खीरा न खाने के पीछे क्या कारण था?

उत्तर: यशपाल ने लेखक के खीरा न खाने के पीछे आत्मसम्मान और नवाब साहब की चालाकी को कारण बताया है। लेखक को लगने लगा था कि नवाब साहब उसे भी आम आदमी की श्रेणी में खींचना चाहते हैं। इसीलिए उसने विनम्रता से इनकार करते हुए कहा कि पेट ठीक नहीं है। इसके पीछे लेखक की गरिमा बनाए रखने की भावना थी।

प्रश्न 10: कहानी में 'नई कहानी' का उल्लेख किस रूप में किया गया है?

उत्तर: यशपाल ने इस कहानी में 'नई कहानी' को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जैसे नवाब साहब केवल खीरे की कल्पना से तृप्त हो जाते हैं, वैसे ही लेखक की कल्पना मात्र से कहानी बन सकती है। बिना पात्र, घटना और ठोस विचार के, केवल लेखक की इच्छा से कहानी रचने पर कटाक्ष किया गया है।

प्रश्न 11: "लखनवी अंदाज" कहानी का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर: यशपाल की "लखनवी अंदाज" कहानी का मुख्य संदेश यह है कि दिखावे की तहजीब और आडंबर वास्तविकता से कितनी दूर होती है। नवाब साहब जैसे लोग केवल बाहर से रईस दिखते हैं, परंतु भीतर से वे संकोच और बनावट से घिरे होते हैं। यह कहानी दिखावे, झूठी शान और नई कहानी के खोखलेपन पर गहरा व्यंग्य करती है।

प्रश्न 12: खीरे के बहाने यशपाल ने किस सामाजिक प्रवृत्ति पर प्रहार किया है?

उत्तर: खीरे के बहाने यशपाल ने उस सामाजिक प्रवृत्ति पर प्रहार किया है जिसमें लोग अपनी सच्चाई छुपाकर केवल बाहरी शिष्टता और नजाकत का प्रदर्शन करते हैं। नवाब साहब का सस्ते दर्जे में सफर करना, लेकिन उसी में रईसी का दिखावा करना समाज में प्रचलित बनावटीपन और आत्मप्रवंचना का प्रतीक है।

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. यशपाल ने नवाब साहब के व्यवहार के माध्यम से कैसी मानसिकता दर्शाई है?

उत्तर: यशपाल ने नवाब साहब के व्यवहार के माध्यम से बनावटी सभ्यता और दिखावे की मानसिकता को उजागर किया है। वे समाज में अपनी ऊँची छवि बनाए रखने के लिए खीरा नहीं खाते, बल्कि केवल रसास्वादन की कल्पना करते हैं।

प्रश्न 2. खीरे की तैयारी में नवाब साहब की सावधानी किस बात की ओर संकेत करती है?

उत्तर: नवाब साहब की खीरे की सजावट और सफाई की सावधानी उनकी बनावटी तहजीब और खानदानी शिष्टाचार को दर्शाती है। इससे यह भी झलकता है कि वे अपनी प्रतिष्ठा को लेकर अत्यधिक सचेत रहते हैं।

प्रश्न 3. लेखक ने खीरे को खाने से मना क्यों किया?

उत्तर: लेखक ने खीरे को खाने से इसलिए मना किया क्योंकि वह नवाब साहब की दिखावटी शालीनता में शामिल नहीं होना चाहता था। उसने आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए विनम्रता से खीरे से इंकार कर दिया।

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

प्रश्न 4. 'नई कहानी' को लेकर यशपाल ने इस कहानी में किस प्रकार व्यंग्य किया है?

उत्तर: यशपाल ने नई कहानी की शैली पर व्यंग्य करते हुए यह दिखाया है कि केवल कल्पना और भाषा से कहानी नहीं बनती। जैसे खीरे को सूँघकर पेट नहीं भरता, वैसे ही कहानी में पात्र, विचार और भावना जरूरी होते हैं।

प्रश्न 5. नवाब साहब के माध्यम से यशपाल ने समाज की किस प्रवृत्ति की आलोचना की है?

उत्तर: यशपाल ने नवाब साहब के माध्यम से समाज में फैली बनावटीपन, झूठी तहजीब और दिखावे की प्रवृत्ति की आलोचना की है। लोग अपनी असलियत छुपाकर केवल सामाजिक छवि बचाने में लगे रहते हैं।

प्रश्न 6. लेखक को नवाब साहब का अचानक व्यवहार क्यों असहज लगा?

उत्तर: लेखक को नवाब साहब का अचानक विनम्र होना इसलिए असहज लगा क्योंकि पहले उन्होंने लेखक की उपस्थिति से असंतोष जताया था। यशपाल ने इसे दिखावे और बनावटीपन की निशानी माना।

प्रश्न 7. नवाब साहब खीरे की फाँकों को क्यों बाहर फेंकते जाते हैं?

उत्तर: नवाब साहब खीरे की फाँकों को सिर्फ उसकी सुगंध से तृप्त होकर बाहर फेंकते हैं। यशपाल इस प्रतीक के जरिए दिखावा, कल्पना और असली रसास्वादन के बीच की दूरी को व्यंग्यात्मक ढंग से दर्शाते हैं।

प्रश्न 8. नवाब साहब के संवादों से उनके चरित्र की कौन-सी विशेषता झलकती है?

उत्तर: उनके संवादों से झलकता है कि वे आत्मप्रशंसा, बनावटी तहजीब और सतही शालीनता में विश्वास रखते हैं। यशपाल ने संवादों के माध्यम से उनके दोहरे व्यक्तित्व को प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 9. खीरे के माध्यम से लेखक ने किस प्रकार सामाजिक दिखावे पर टिप्पणी की है?

उत्तर: लेखक यशपाल ने खीरे को प्रतीक बनाकर यह दिखाया कि समाज में लोग चीजों का वास्तविक आनंद नहीं लेते, केवल दूसरों को दिखाने के लिए सजावटी व्यवहार करते हैं। यह व्यंग्यात्मक सामाजिक आलोचना है।

प्रश्न 10. यशपाल की लेखन शैली से उनकी दृष्टि का कौन-सा पहलू उजागर होता है?

उत्तर: यशपाल की लेखन शैली में व्यंग्य, प्रतीक और यथार्थ की पकड़ स्पष्ट झलकती है। वे समाज की कृत्रिमता और साहित्यिक जगत की खोखली प्रवृत्तियों की आलोचना गहराई से करते हैं।

रिक्त स्थान भरें

- "लखनवी अंदाज" कहानी के लेखक _____ हैं।
उत्तर: यशपाल
- नवाब साहब खीरे को सजाते हैं, सूँघते हैं लेकिन _____ नहीं खाते।
उत्तर: खीरा
- लेखक ने खीरा खाने से इनकार करते हुए कहा कि उनका _____ कमजोर है।
उत्तर: मेदा (पेट)

4. नवाब साहब ने खीरे की फाँकों पर _____ और लाल मिर्च डाली।
उत्तर: जीरा-मिला नमक
5. यशपाल ने नवाब साहब के माध्यम से _____ समाज का व्यंग्य किया है।
उत्तर: बनावटी/दिखावटी

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. कहानी "लखनवी अंदाज" के लेखक कौन हैं?
A) प्रेमचंद
B) यशपाल
C) जैनेन्द्र
D) रामवृक्ष बेनीपुरी
उत्तर: B) यशपाल
2. नवाब साहब खीरे को क्यों नहीं खाते हैं?
A) उन्हें खीरे से एलर्जी थी
B) उन्हें खीरे का स्वाद पसंद नहीं था
C) वे दिखावे की तहजीब बनाए रखना चाहते थे
D) लेखक ने उन्हें खाने से मना किया
उत्तर: C) वे दिखावे की तहजीब बनाए रखना चाहते थे
3. लेखक ने खीरे को खाने से क्यों इनकार किया?
A) खीरा कड़वा था
B) आत्मसम्मान बनाए रखना चाहता था
C) उन्हें भूख नहीं थी
D) वे जल्दी में थे
उत्तर: B) आत्मसम्मान बनाए रखना चाहता था
4. यशपाल की कहानी में खीरे की तैयारी किस भावना को दर्शाती है?
A) जल्दीबाजी
B) क्रोध
C) सजगता और बनावट
D) आलस्य
उत्तर: C) सजगता और बनावट

Ncert Solutions of पाठ 9: लखनवी अंदाज (यशपाल)

5. 'नयी कहानी' के संदर्भ में लेखक ने क्या संदेश दिया है?

A) केवल कल्पना से कहानी संभव नहीं

B) कहानी में पात्र ज़रूरी नहीं

C) कोई भी कहानीकार बन सकता है

D) पाठक की राय ज़रूरी है

उत्तर: A) केवल कल्पना से कहानी संभव नहीं